ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 263-264

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

पशुओं में बॉझपन समस्या और निवारण

धर्मेन्द्र सिंह Email : aaryvrat2013@gmail.com

Received- 28.06.2020, Revised- 01.07.2020, Accepted - 04.07.2020

सारांश– ***डेयरी व्यवसाय में पूर्ण सफलता के लिए एक गाय प्रतिवर्ष एक बच्चे को पैदा होना चाहिए । यह तभी संभव हो पाता है जब प्रजनन चक्र नियमित हो व पशु पूर्व स्वस्थ हो। लेकिन दुधारू पशुओ में बॉझपन एक बड़ी समस्या है जिससे पशुपालक को बड़ा नुकसान होता है। मादा पशुओं में बॉझपन का अर्थ है गर्भ ग्रहण न करना। यह रोग प्रायः भैसों में अधिक पाया जाता है। रोगग्रसित मादाऐं कृत्रिम अथवा,प्राकृतिक पाया जाता है। रोगग्रसित मादाऐं कृत्रिम अथवा, प्राकृतिक रूप से मादा जननेन्द्रिय में परीक्षित वीर्य डालने पर भी गर्भ धारण नहीं करती। स्थायी रूप से नर या मादा में प्रजनन शक्ति का हास होना बॉझपन कहलाता है। दूध देने वाले पशुओं में आजकल यह बहुत बडी आर्थिक समस्या है। दुधारू पशुओ ं में 10.30ः पशु बॉझपन और प्रजनन समस्या के शिकार होते है। अच्छी प्रजननदर व अच्छे उत्पादन के लिए नर और मादा दोनों पशुओ ं को अच्छी तरह स` खिलाया पिलाया जाना चाहिए तथा रोगों से मुक्त रखना चाहिए अन्यथा पशुपालनों के लिए बड़े आर्थिक नुकसान का कारण बन जाता है।***

कुंजीभूत शब्द–वर्णाश्रम व्यवस्था, संधि–विच्छेद, सम्बन्ध, कर्म, स्वभाव ।

एसोसिएट प्रोफेसर– पशुपालन एंव दुग्ध विज्ञान विभाग श्री मुरली मनोहे र टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय , बलिया (उ0प्र0) भारत

अनुरूपी लेखक

पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता काफी हद तक उनकी प्रजनन क्षमता पर निर्भर करता है।

बॉझपन के कई कारण हो सकते है और ये जटिल भी हो सकते है। जैसे–

बॉझपन के कारण–

1. शरीर रचना में खराबी (Awatomical defect) के कारण
2. जननेन्द्रिय रोग (Genital desease)
3. जननेन्द्रिय चोट, (Injuries to the genitalia)
4. अनुवांशिक कारण (Genetic causes)
5. हारमोन असंतुलन (Hormonal disturbances)
6. कुपोषण (Faulty tading)
7. दुषित वातावरण एंव कुप्रबन्धन (Bad environment)

बॉझपन या गर्भधारण कर एक बच्चे को जन्म न देना प्रमुख कारण पोषण की कमी हो सकता है। खनिज तत्वों और जिंक की कमी के कारण पशु गर्भित नही हो पाते है। यदि पशु ब्याने के 60 दिन बाद भी गर्मी में नहीं आता है तो पशु चिकित्सक से जॉच करानी चाहिए।

1. Anatomical Defect– ऐसी कमियॉ शरीर बनते समय नर या मादा दोनो ं पशुओ ं में हो सकती है। अविकसित प्रजनन अंग या उसमें आई किसी खराबी के कारण हो सकता है। इस प्रकार पशुओं की गर्भधारण शक्ति क्षीण हो जाती है और तो बॉझ हो जाता है।

2. Genital Disease- नर पशु मे ं ब्रूसेल्लोसिस (Brucellosis) ट्राइकोमोनियासिस (Trichomoniasis) तथा मादा मे ं योनिशोथ (Vaginitis) विब्रोओसिस (Vibrosis) क्षय रोग (T.B) ब्रूसेल्लोसिस , ट्राईकोमोनियासिस आदि विशिष्ट (Specific) बीमारियॉ बॉझपन का कारण बनती है। योनिशोथ ;टंहपदप. जपेद्ध एभगशोथ (Vulvitis) तथा अण्डाणुनाल शोथ (Salpingotis) आदि के कारण या तो अण्डाणु अथवा गर्भिन पशु का गर्भ गिर जाता है।

3. जननेन्द्रिय चोट (Injuries to genitalia) नर–मादा पशुओ ं के जननेन्द्रिय में लगी हुई चोटें भी बॉझपन का कारण बन सकती है।

नर जननेन्द्रिय में चोट लगने से अण्डकोष तथा इपिडिडिमिस में सूजन आकर शुक्राणु उत्पादन की क्रिया समाप्त हो जाती है। मादा जननेन्द्रिय मे ं चोट लगने से भग–शोथ योनि शोथ, गर्भाशय शोथ (Metritis) गर्भाशय में पीव पड़ जाना (Pyometra) तथा गर्भाशय का उतर जाना (Prolopse of uterus) आदि रोगो ं के हो जाने का भय रहता है।

4. हारमोनल असन्तुलन (Hormonal imbalance)- शरीर में नलिका विहीन ग्रान्थियो ं (Ductless glands) से जो स्त्राव निकलता है उसे हारमोन कहते है। कुछ हारमोन जैसे–अग्र पिट्यूटरी (Anterior Pituitary) टेस्टेस्टरोन,डिम्ब ग्रन्थि, फॉलिकिल, कॉर्पस ल्यूटियम तथा गर्भनाल के हारमोन इत्यादि नर–मादा पशुओं की जननेन्द्रिय की बढ़ोतं तरी एंव उनकी कार्य क्षमता के लिए उत्तरदायी होते है। अतः शरीर में उनका असंतुलन होना बॉझपन का सूचक है। हारमोनल असतुंलन अधिकतर मादा पशुओ ं में देखने को मिलता है।

5. अनुवाशिक कारण(Genetic causes) कुछ घातक–कारण (Lethal factors) जो भ्रूण को गर्भाशय में ही मार डालते है बॉझपन के कारण बनते है। यदि पशु किसी अनुवांशिक या जन्मजात असामान्यता से ग्रस्त हो तो ऐसे पशुओं को समूहसे छॉट देना चाहिए अनुवांशिक समस्या से ग्रस्त पशु को प्रजनन के लिए उपयोग में नहीं लाना चाहिए क्योकि यह

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

अवस्था मॉ से उसकी सन्तान में आ सकती है और आगे आने वाली पीढी को प्रभावित कर सकती है।

6. कुपोषण (Malnutrition)–पशुओ ं को सतुंलित आहार न मिल पाने के कारण हमारे देश में लगभग 20 से 40% पशु प्रतिवर्ष बॉझ हो जाते है। प्रजनन के लिए सही मात्रा मे ंकार्बोहाइड्रेट प्रोटीन, खनिज पदार्थ विटामिन एंव पानी की आवश्यकता होती है। इनमे ं से किसी भी तत्व की कमी या अधिकता होने से पशुओं में बॉझपन की समस्या हो सकती है। पशु आहार में विटामिन । तथा E की कमी हो जाने से ओवरी अविकसित रह जाती है और मादा पशु गर्म नहीं हो पाता है। प्रोटीन तथा कैल्सियम तथा फास्फोरस जैसे खनिज लवण पशु के स्वास्थ एंव प्रजनन शक्ति के लिए बहुत आवश्यक है। इनकी कमी से उनमें अस्थायी अथवा स्थायी बॉझपन आ जाता है। गाय भैसों में मदकाल औसतन 18 घंटे तक रहता है इसके समाप्त होने के लगभग 12 से 14 घंटे बाद अंडाशय से डिम्ब क्षरण होता है। जो शुक्राणु से मिलकर भ्रूण बनाता है। अतः सही समय एंव सही स्थान पर कृत्रिम गर्भधान द्वारा गर्म पशु को गर्भित कराना चाहिए।

7. दूषित वातावरण एंव कुप्रबंधन– (Bad Environment and Faulty management) पशुओं पर पर्याप्त तापक्रम , रोशनी तथा सुप्रबन्ध का पशु प्रजनन पर काफी अच्छा प्रभाव पड़ता है। यदि पशु को गन्दे, अॅधेरे, बिना रोशनदान,के पशुशाला में रखा जाता है। तो प्रजनन शक्ति का हास होता है तथा पशुओं में बिमारी बढ़ने की सम्भावना बढ़ जाती है एंव उसके स्वास्थ पर प्रतिकुल प्रभाव पड़ता है।

उपचार एंव रोकथाम– यदि बॉझपन रोग कुपोषण की वजह से है तो पशु को सन्तुलित आहार दिया जाए। जिसमें प्रोटीन खनिज लवण तथा विटामिन देना चाहिए तथा उसे पर्याप्त मात्रा मे हरा चारा खिलाया जाना चाहिए। यह उसके उत्पादन तथा प्रजनन दर में वृद्धि करता है। यदि यह रोग हारमोनो के असन्तुलन के कारण हुआ है। तो उसका निदान किसी पशु चिकित्सालय तथा कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र पर पशु को ले जाकर कराया जा सकता है। यदि पशु बिल्कुल ठीक नहीं होते है तो गौशाला भेज देना चाहिए। पशुओं में सन्तुलित व नियामित आहार देकर अच्छे प्रजनन ढंगों, सुप्रबन्धो ं तथा रोगनिरोधक विधियों को अपना कर बॉझपन को नियंत्रित किया जा सकता है। कृत्रिम गर्भाधान करते समय सॉड़ो का परीक्षित वीर्य ही प्रयोग करना चाहिए। सांड़ों के वीर्य को एंटीबायोटिक्स का प्रयोग करना लाभप्रद होता है। पशुचिकित्सक की सलाह के अनुसार बॉझपन की समस्या में विटामिन E विटामिन। टोना फास्फान,यूटेरोटोन, सेक्जोम प्रजना तथा मैस्टालॉन न्यू नामक औषध्यिॉ देना चाहिए। होम्योपैथिक औषधि सिपिया 200 बॉझपन की अच्छी दवा है।

*****

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*